National Journal of Research and Innovative Practices (NJRIP)
Vol-6, Issue-11, 2021; ISSN No. : 2456-1355; Web: www.edusanchar.com

''कोटा के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं प्रभावकता का तुलनात्मक अध्ययन''

पिंकी व्यास / डॉ. मधु कुमार भारद्वाज
पी.एच.डी. शोधार्थी पी.एच.डी. पर्यवेक्षक

Key Words - व्यवसायिक संतुष्टि, प्रभावकता, शहरी एवं ग्रामीण शिक्षक

सारांश

प्रस्तुत शोध में राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं प्रभावकता का तुलनात्मक अध्ययन किया हैं जिसमें शोधार्थी को निष्कर्ष प्राप्त हुए है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षक शहरी क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र में गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों से अधिक संतुष्ट पाए गए हैं। दोनों की व्यावसायिक संतुष्टि में अन्तर पाया गया हैं परन्तु प्रभावकता में राजकीय विद्यालय की अपेक्षा गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षक अधिक प्रभावी शिक्षण करते पाए गए है। ग्रामीण क्षेत्रों की राजकीय महिला शिक्षक गैर राजकीय विद्यालय की महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक प्रभावी शिक्षण करते पाए गए हैं। शिक्षक समाज के लिए पथ–प्रदर्शक के रूप में स्वीकार किए जाते हैं। अतः उन्हें भी समानता का अधिकार प्राप्त हो। उनकी व्यावसायिक संतुष्टि के लिए वेतन वृद्धि, कार्य की अवधि, अवकाश इत्यादि पर ध्यान देने की अति आवश्यकता है। जब शिक्षक अपने व्यवसाय के प्रति संतुष्टि रखे तो वह शिक्षा के सभी स्तरों पर दायित्वों को पूर्णरूप से निर्वाह कर सकेगा। शिक्षक का जीवन चुनौतियों से भरा होता है। उसके कधों पर राष्ट्र की भावी पीढ़ी के निर्माण का दायित्व होता है। अतः वह तभी पूर्ण रूप से पूरा कर सकेगे जब उसकी व्यावसायिक संतुष्टि उच्च स्तर की होगी एवं उनकी शिक्षण प्रभावकता प्रभावी हो।

1. प्रस्तावना –

शिक्षा मनुष्य को सांसारिक जीवन व्यतीत करने के योग्य बनाती है। बालक जन्म के समय असामाजिक एवं असहाय होता है, उसे सामाजिक और सांस्कृतिक मानव बनाने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा व्यक्ति की नैसर्गिक प्रवृत्तियों का शोधन और मार्गन्तरीकरण करके उसे समाज का एक सक्रिय नागरिक बनाती है जिससे वह अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन कुशलतापूर्वक कर सके। ऐसी शिक्षा हमें अच्छे कुशल शिक्षक से प्राप्त होती है। **राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1964–66)** ने ''शिक्षा राष्ट्र के आर्थिक, सामाजिक विकास का शक्तिशाली साधन है शिक्षा राष्ट्रीय सम्पन्नता एवं राष्ट्र कल्याण की कुँजी हैं।''

अतः मुख्य रूप से ऐसी शिक्षा वही शिक्षक प्रदान कर सकता है जो अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट हो जिसकी शिक्षण प्रभावकता उच्च स्तर की हो।

2. समस्या का औचित्य –

शिक्षा के क्षेत्र में जब अनुसंधान कार्य किया जाता है तो उस अध्ययन की उपयोगिता एवं महत्व का औचित्य सिद्ध करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि इसके द्वारा यह सिद्ध कर सकें कि इस अनुसंधान के परिणाम व निष्कर्ष शैक्षिक जगत को किस प्रकार प्रभावित करेंगे ? इसके अतिरिक्त औचित्य, शैक्षिक समस्या की उपयोगिता एवं महत्व को सिद्ध करने में भी सहायक होता है।

शिक्षक एवं छात्र को जोड़ने की महत्वपूर्ण कड़ी हैं शिक्षण सुव्यवस्थित शिक्षण के लिए शिक्षक का मानसिक संतुलन एवं दृष्टिकोण अपने शिक्षण के प्रति सकारात्मक हो तो तभी शिक्षण की प्रभावकता बढ़ायी जा सकती है क्योंकि किसी भी देश का विकास गुणावत्तायुक्त शिक्षा से प्रभावित होता है और शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षक के व्यवहार से प्रभावित होती है। अतः शिक्षक के व्यवहार को प्रस्तुत करने का कार्य किया गया है ताकि यह ज्ञात किया जा सके कि किन–किन कारणों से शिक्षकों के व्यवहार शिक्षण के प्रति अनुरूप है तथा किन कारणों को दूर किया जा सकते हैं ताकि वे भविष्य में एक योग्य शिक्षक बन सकें।

3. समस्या कथन –

''कोटा के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं प्रभावकता का तुलनात्मक अध्ययन''

4. उद्देश्य –

1. कोटा के शहरी क्षेत्र में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन करना।
2. कोटा के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन करना।
3. कोटा के शहरी क्षेत्र में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावकता का अध्ययन करना।
4. कोटा के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में शिक्षकों की प्रभावकता का अध्ययन करना।

5. परिकल्पनाएँ –

1. कोटा के शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. कोटा के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. कोटा के शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की प्रभावता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. कोटा के शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की प्रभावता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

6. अध्ययन का परिसीमन –

प्रस्तुत शोध के लिए शोधार्थी ने कोटा के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालय के 100–100 महिला शिक्षकों एवं पुरुष शिक्षकों का चयन किया गया है।

7. तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण –

1. **व्यावसायिक संतुष्टि** –व्यासायिक संतुष्टि का शाब्दिक अर्थ व्यक्ति को अपने व्यवसाय से प्राप्त होने वाला संतोष है जो एक सुखद संवेगात्मक अवस्था है जो अध्यापक के कार्य के स्वरूप को निर्धारित करती है।
2. **प्रभावकता** – शिक्षण कौशलों, व्यावसायिक योग्यताएँ तथा शिक्षण उद्देश्यों को प्राप्त करके अपने शिक्षण को प्रभावशाली बनाना शिक्षक प्रभावकता कहलाता हैं। शिक्षण को प्रभावशाली बनाने में शिक्षक का व्यक्तित्व छात्र अन्तःक्रिया एवं उद्देश्य प्रमुख स्थान रखते है।
3. **शहरी क्षेत्र** – शहरी क्षेत्रों से तात्पर्य ऐसे क्षेत्र जिसकी जनसंख्या घनत्व आस–पास के क्षेत्रों की तुलना में अधिक और मानवीय सुविधाओं की प्रचुर मात्रा उपलब्ध हो शहरी क्षेत्र के अन्तर्गत आते है।
4. **ग्रामीण क्षेत्र** – ऐसे भौगोलिक क्षेत्र जो नगरों और कस्बों से बाहर होता है। ग्रामीण क्षेत्र कहलाते हैं। यहाँ जनसंख्या घनत्व नहीं होता है।
5. **राजकीय विद्यालय** – ऐसे विद्यालय जो स्थानीय राज्य या राष्ट्रीय सरकार द्वारा वित्त पोषित और नियंत्रित होते है तथा यह विद्यालय सरकार को समर्पित होते हैं।
6. **गैर राजकीय विद्यालय** – ऐसे विद्यालय जिन्हें सरकार द्वारा आंशिक वित्त नहीं दिया वह निजी विद्यालय होते है इन्हें किसी एक निजी संकाय द्वारा नियंत्रित किया जाता है जो छात्रों के ट्यूशन के द्वारा वित्त पोषित होते है।

8. शोध विधि –

प्रस्तुत शोध के हेतु सर्वेक्षण विधि एवं यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है।

9. न्यादर्श एवं जनसंख्या–

प्रस्तुत शोध में यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा पुरुष शिक्षकों एवं महिला शिक्षकों का राजकीय एवं गैर राजकीय से 100 पुरुष शिक्षक एवं 100 महिला शिक्षकों का चयन किया गया है।

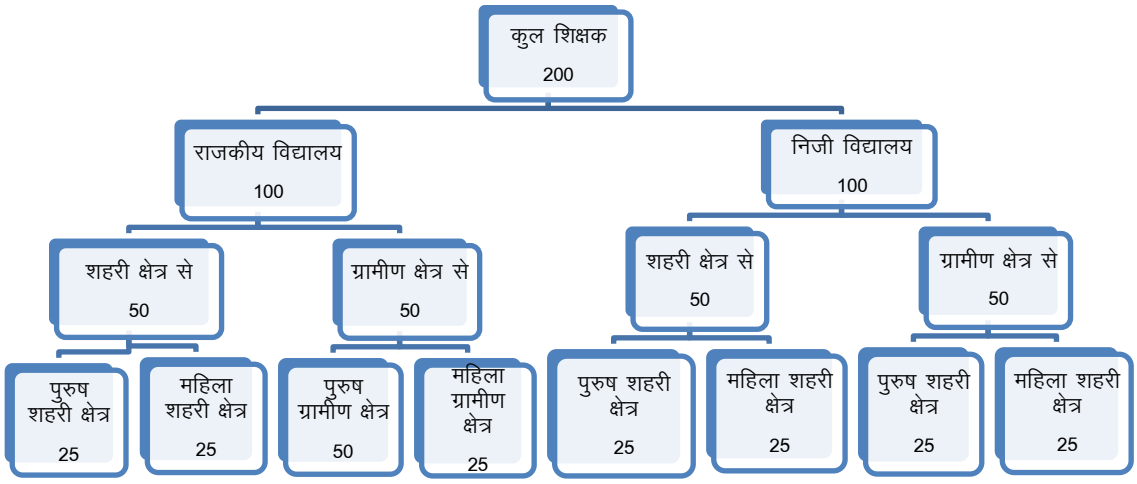

10. उपकरण –

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया हैं –

1. शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि हेतु – डॉ. प्रमोद कुमार एवं डॉ. डी.एन. मूथा द्वारा निर्मित अध्यापक कृत्य संतोष मापनी का प्रयोग किया है।
3. प्रभावकता – डॉ. प्रमोद कुमार एवं डॉ. डी.एन. मूथा द्वारा निर्मित शिक्षक प्रभावशीलता मापनी का प्रयोग किया है।

11. प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या –

परिकल्पना 1 कोटा के शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी संख्या 1

समूह	संख्या	मध्यमान M	प्रमाप विचलन SD	टी परीक्षण का मान	सार्थकता स्तर
शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षक	50	52.36	2.29	13.089	**सार्थक अन्तर है**
शहरी क्षेत्रों में स्थित गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षक	50	45.02	2.68		

स्वतंत्रता का अंश $(df) = N_1 + N_2 - 2 = 50 + 50 - 2 =$

$df = 98$ के लिए मान $0.05 = 1.984$

$df = 98$ के लिए मान $0.01 = 2.627$

शहरी क्षेत्रों में राजकीय विद्यालय एवं गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का मध्यमान क्रमशः 52.36 एवं 45.02 प्राप्त हुए इनका प्रमाप विचलन क्रमशः 2.29 एवं 2.68 प्राप्त हुआ। इनका टी का मूल्य 13.089 प्राप्त हुआ है जो कि स्वतंत्रता के अंश (df) 98 के लिए सार्थकता के स्तर 0.05 एवं 0.01 के मान 1.98 एवं 2.62 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष– राजकीय विद्यालय एवं गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर होता है।

परिकल्पना 2. कोटा के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी संख्या 2

समूह	संख्या	मध्यमान M	प्रमाप विचलन SD	टी परीक्षण का मान	सार्थकता स्तर
ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षक	50	50.06	2.53	23.143	**सार्थक अन्तर है**
ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षक	50	37.52	2.88		

स्वतंत्रता का अंश (df) = $N_1 + N_2 - 2 = 50 + 50 - 2 =$

df = 98 के लिए मान 0.05 = 1.98

df = 98 के लिए मान 0.01 = 2.62

ग्रामीण क्षेत्रों में राजकीय विद्यालय एवं गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का मध्यमान क्रमशः 50.06 एवं 37.52 प्राप्त हुए इनका प्रमाप विचलन क्रमशः 2.53 एवं 2.88 प्राप्त हुआ। इनका टी का मूल्य 23.143 प्राप्त हुआ है जो कि स्वतंत्रता के अंश (df) 98 के लिए सार्थकता के स्तर 0.05 एवं 0.01 के मान 1.98 एवं 2.62 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष – ग्रामीण क्षेत्रों में राजकीय विद्यालय एवं गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर होता है।

परिकल्पना 3 कोटा के शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावकता को दर्शाती तालिका

सारणी संख्या 3

समूह	संख्या	मध्यमान M	प्रमाप विचलन SD	टी परीक्षण का मान	सार्थकता स्तर
शहरी क्षेत्रों में राजकीय विद्यालय में कार्यरत पुरुष शिक्षक	25	320.72	2.28		

शहरी क्षेत्रों में गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत पुरुष शिक्षक	25	330.64	2.20	15.659	**सार्थक अन्तर है**

स्वतंत्रता का अंश (df) = $N_1 + N_2 - 2 = 25 + 25 - 2 = 48$

df = 48 के लिए मान 0.05 = 2.01

df = 48 के लिए मान 0.01 = 2.68

शहरी क्षेत्रों में राजकीय विद्यालय एवं गैर राजकीय विद्यालय के पुरुष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावकता का मध्यमान क्रमशः 320.72 एवं 330.64 प्राप्त हुए इनका प्रमाप विचलन क्रमशः 2.28 एवं 2.20 प्राप्त हुआ। इनका टी का मूल्य 15.659 प्राप्त हुआ है जो कि स्वतंत्रता के अंश (df) 48 के लिए सार्थकता के स्तर 0.05 एवं 0.01 के मान 2.01 एवं 2.68 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष – शहरी क्षेत्रों में राजकीय विद्यालय एवं गैर राजकीय विद्यालय के पुरुष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावकता में सार्थक अन्तर होता है।

परिकल्पना 4 कोटा के शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी संख्या 4

समूह	**संख्या**	**मध्यमान M**	**प्रमाप विचलन SD**	**टी परीक्षण का मान**	**सार्थकता स्तर**
शहरी क्षेत्रों में राजकीय विद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक	25	304.24	2.47		
शहरी क्षेत्रों में गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक	25	312.76	2.01	13.385	**सार्थक अन्तर है**

स्वतंत्रता का अंश (df) = $N_1 + N_2 - 2 = 25 + 25 - 2 = 48$

df = 48 के लिए मान 0.05 = 2.01

df = 48 के लिए मान 0.01 = 2.68

शहरी क्षेत्रों में राजकीय विद्यालय एवं गैर राजकीय विद्यालय के महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावकता का मध्यमान क्रमशः 304.24 एवं 312.76 प्राप्त हुए इनका प्रमाप विचलन क्रमशः 2.47 एवं 2.01 प्राप्त हुआ। इनका टी का मूल्य 13.385 प्राप्त हुआ है जो कि स्वतंत्रता के अंश (df) 48 के लिए सार्थकता के स्तर 0.05 एवं 0.01 के मान 2.01 एवं 2.68 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष – शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय की महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावकता एवं गैर राजकीय विद्यालय के महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावकता में सार्थक अन्तर होता है।

11. शोध निष्कर्ष –

परिकल्पना 1 कोटा के शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

व्याख्या एवं विश्लेषण – शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय एवं गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के मध्यमान 2.92 एवं 2.68 स्वतंत्रता के अंश (df) 98 के लिए सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 के मान 1.98 एवं 2.62 से अधिक है। अतः यह शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

विवेचना – प्रस्तुत शोध में प्राप्त परिणामों के आधार पर सामान्यीकरण किया जाता है। शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय के शिक्षक स्वयं को प्राप्त वेतन व अवकाश सम्बन्धी सुविधाओं से उच्च सीमा तक संतुष्ट है। जबकि गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षक स्वयं को प्राप्त वेतन, अवकाश, कार्य की प्रकृति, कर्मचारियों का आपसी सहयोग सम्बन्धी सुविधाओं से संतुष्ट नहीं होते हैं। असंतुष्टि का प्रमुख कारण गैर राजकीय विद्यालय सेवाओं में शिक्षकों की चयन प्रक्रिया में उच्च प्रतियोगिता रहती है इसलिए स्वयं को विद्यालय व शिक्षण संस्थाओं में स्थापित कर कार्य कुशलता को बनाए रखना होता है। अतः यह अपने व्यवसाय से कुठिण्त रहते है और इनकी व्यावसायिक संतुष्टि प्रभावित होती है।

निष्कर्ष – शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर होता है।

परिकल्पना 2 कोटा के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

व्याख्या एवं विश्लेषण – ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय एवं गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के मध्यमान 2.53 एवं 2.88 स्वतंत्रता के अंश (df) 98 के लिए सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 के मान 1.98 एवं 2.62 से अधिक है। अतः यह शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

विवेचना – प्रस्तुत शोध में प्राप्त परिणामों के आधार पर सामान्यीकरण किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय के शिक्षक स्वयं को प्राप्त वेतन व अन्य सम्बन्धी सुविधाओं से उच्च सीमा तक संतुष्ट है।

जबकि गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षक स्वयं को प्राप्त वेतन, अवकाश, कार्य की प्रकृति, कर्मचारियों का आपसी सहयोग सम्बन्धी सुविधाओं से संतुष्ट नहीं होते हैं। असंतुष्टि का प्रमुख कारण गैर राजकीय विद्यालय सेवाओं में शिक्षकों की चयन प्रक्रिया में उच्च प्रतियोगिता रहती है इसलिए स्वयं को विद्यालय व शिक्षण संस्थाओं में स्थापित कर कार्य कुशलता को बनाए रखना होता है। अतः यह अपने व्यवसाय से कुठिण्त रहते है और इनकी व्यावसायिक संतुष्टि प्रभावित होती है।

निष्कर्ष – ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर होता है।

परिकल्पना 3 कोटा के शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की प्रभावकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

व्याख्या एवं विश्लेषण – शहरी क्षेत्रों में राजकीय विद्यालय एवं गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत पुरुष शिक्षकों के प्रभावकता के मध्यमान 2.28 एवं 2.20 स्वतंत्रता के अंश (df) 48 के लिए सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 के मान 1.98 एवं 2.62 सार्थकता स्तर से अधिक है। अतः यह शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

विवेचना – प्रस्तुत शोध में प्राप्त परिणामों के आधार पर सामान्यीकरण किया जाता है कि शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावकता उच्च स्तर की है।

जबकि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की प्रभावकता गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों से कम पाई गई है। इसके प्रमुख कारण शिक्षकों के शिक्षण के प्रति कम रूझान, समय–समय पर उपयुक्त सामग्री की अनुउपलब्धता योजनाओं के प्रति कम रूझान एवं विद्यालय वातावरण प्रमुख कारण पाए गए। अतः वर्तमान समय में शिक्षकों को प्रमुख रूप प्रशिक्षण के साथ–साथ परीक्षण की भी आवश्यकता पाए गई है।

निष्कर्ष – शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की प्रभावकता एवं गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की प्रभावकता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

परिकल्पना 4 कोटा के शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की प्रभावकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

व्याख्या एवं विश्लेषण – शहरी क्षेत्रों में राजकीय विद्यालय एवं गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षकों की प्रभावकता के मध्यमान 2.47 एवं 2.01 स्वतंत्रता के अंश (df) 48 के लिए सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 के मान 2.011 एवं 2.682 से अधिक है। अतः यह शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

विवेचना – प्रस्तुत शोध के प्राप्त परिणामों के आधार पर सामान्यीकरण किया जाता है। शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की प्रभावकता उच्च स्तर की पायी गई है।

जबकि गैर राजकीय विद्यालय की महिला शिक्षिकाएँ की प्रभावकता राजकीय विद्यालय की शिक्षिकाओं से कम पायी है। अन्तर का प्रमुख कारण अतिरिक्त कार्यभार, कर्मचारी सहयोग, भेदभाव इत्यादि शिक्षण प्रभावकता को प्रभावित करते है।

निष्कर्ष – शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षकों की प्रभावकता एवं गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षकों की प्रभावकता में सार्थक अन्तर होता है।

12. शैक्षिक निहितार्थ –

1. प्रस्तुत शोधकार्य शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि पर शोध शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय में रूचि उत्पन्न करने में उपयोगी हो सकेगा।
2. व्यावसायिक संतुष्टि एक ऐसा विषय है जिससे शिक्षक का व्यवहार परिवर्तन होता है, जो विद्यार्थियों की शैक्षिक विकास पर प्रभाव डालता है। शिक्षकों में शिक्षण के प्रति रूचि उत्पन्न कर विद्यार्थियों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने में उपयोगी साबित हो सकेगा।

3. शिक्षकों की शिक्षण के प्रति प्रभावकता विषय पर प्रस्तुत शोध के द्वारा शिक्षकों का परिवर्तित व्यवहार समाज और राष्ट्र हित में उपयोगी होगा। शिक्षकों की शिक्षण के प्रति प्रभावकता विषय पर प्रस्तुत शोध के द्वारा शिक्षकों का परिवर्तित व्यवहार शिक्षा में गुणात्मक सुधार ला सकेगा।
4. शिक्षकों की शिक्षण के प्रति व्यावसायिक संतुष्टि शिक्षण अभिवृत्ति एवं प्रभावकता विषय पर प्रस्तुत शोध के द्वारा शिक्षकों का परिवर्तित व्यवहार विद्यार्थियों में शिक्षकों के प्रति सम्मान जगाने में सफल साबित हो सकेगा।

13. सुझाव–

1. राजकीय व गैर राजकीय विद्यालय के स्थान पर महाविद्यालय के व्याख्याताओं पर भी शोध कार्य किया जा सकता है।
2. महाविद्यालय स्तर पर एवं बी.एड. एवं बी.एस.टी.सी. के व्याख्याताओं पर किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध का क्षेत्र कोटा जिले से बढ़ाकर हाड़ौती क्षेत्र भी लिया जा सकता है।
4. प्रस्तुत शोध अध्ययन कोटा जिले तक ही सीमित किया है। अतः भविष्य में राजस्थान के अन्य जिलों में भी सम्मिलित कर शोध अध्ययन किया जा सकता है।
5. वर्तमान शोध अध्ययन में राजकीय विद्यालय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि, शिक्षण अभिवृत्ति एवं प्रभावकता का अध्ययन किया है अतः भावी शोध में केन्द्रीय विद्यालय एवं नवोदय विद्यालय को भी शिक्षकों को भी सम्मिलित किया जा सकता है।
6. प्रस्तुत अध्ययन में अन्य चर अभिक्षमता, आकांक्षा स्तर एवं तकनीकी ज्ञान को सम्मिलित किया जा सकता है।

14. संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. भार्गव, महेश (1997), आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन हरप्रसाद, भार्गव, आगरा
2. भटनागर (2005), शैक्षिक एवं मानसिक मापन आर. लाल बुक डिपो, मेरठ
3. बेस्ट, जे. डब्ल्यू. (1983), रिसर्च इन एजूकेशन पेन्टिस हॉल ऑफ इण्डिया, प्रा.लि. नई दिल्ली
4. ढौढियाल, एस. एन. (1972), ''शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र'' राजस्थान ग्रंथ अकादमी, जयपुर
5. जायसवाल, सीताराम (2012), शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श, अग्रवाल पब्लिकेशन।
6. गुप्ता, एस. पी. एवं गुप्ता, अल्का (2005), आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
7. मेहता, वी.आर. (2006), 'उभरते भारतीय समाज में अध्यापक शिक्षा, बी.एड. कॉलेज, कोटा
8. सुखिया, महरोत्रा तथा महरोत्रा आर. एन.(1979), ''शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्त्व'' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा